

श्री गऊ (धेनु चालीसा)



आगत उद्देश्य :- भावतवर्षक पुनर विश्वगुरु आसनत अधिष्ठित कवि सर्वत्र सनातन धर्म आरु बागबाजा प्रतिष्ठा कवा।
हमारा उद्देश्य :- भारतवर्ष को पुनः विश्वगुरु पद पर आसीन कर, विश्व में सर्वत्र सनातनधर्म व रामराज्य स्थापित करना।

श्री गीता गौशाला परमार्थ संस्था (ट्रस्ट), जोरहाट

गौमाता व गीता ज्ञान द्वारा विश्व में सर्वत्र सनातन धर्म की पुनः स्थापना करना

श्री गीता आश्रम गौमहातीर्थ

दिनांक 30 मार्च, 2015 को गौ तस्करों द्वारा कत्लखाने ले जा रहे 98 गोवंश खरीद कर उनके प्राणों की रक्षा की गई और दिनांक 30 मई, 2015 को महामंडलेश्वर श्रीश्री बालकानन्दजी महाराज, दीदी मां ऋतम्भराजी एवं सम्मानित संतों के कर कमलों से इस गौशाला की नींव रखी गई।

तब से आज दिनांक 29 अक्टूबर 2025 को 1700 से अधिक गोवंश की सेवा हो रही है। जिनमें 1165 गोवंश तस्करों से छोड़ा कर पुलिस प्रशासन तथा 598 गोवंश दुर्घटनाग्रस्त एवं बीमार भी शामिल हैं।

गौमाताजी के गोबर-गोमूत्र से खाद, कीटनाशक के द्वारा भूमि को उपजाऊ करना, पंचगव्य के द्वारा देनंदिन वस्तुओं सहित औषधियों का निर्माण कर स्वस्थ एवं आत्मनिर्भर भारत बनाने कार्य निरंतर चल रहा है। प्रस्तावित गौशाला सहित बहु उद्देशीय भवन के निर्माण होने पर गौसेवा प्रशिक्षण शिविर के तहत 100 कार्यकर्ताओं को त्रिमासिक निःशुल्क ट्रेनिंग दी जाएगी।

इन ट्रेनिंग प्राप्त कार्यकर्ताओं के द्वारा गोसेवा व गीता ज्ञान के माध्यम से विश्व का बहुत बड़ा उपकार होगा।

ॐ श्री गणेशाय नमः

ॐ जय श्रीराम

ॐ जयश्री गौमाता

❧ श्री गऊ (धेनु चालीसा) ❧

दोहा :

अजर अमर है मात गौ, पूजहि वृंद सुजान ।
सकल देवों की पूजनीय, करहि सब कल्याण ॥
माँ सुमिरन मुख सहज हो । चारपदारथ सार ।
धरा रूपसुरभि धरा । महिमाअमितअपार ॥

देव दनुज सागर मथि पावा । चौदह रतन प्रमुख गौपावा ॥
पांच धेनु प्रगटेउ जग बहुला । नन्दा भद्रा सुरभि सुशीला ॥
महागौरी महिषासुर घाती । वृषवाहन शंकर शिवराती ॥
धन्य मातु मल देव बनाई । प्रथम पूज्य गजवदन कहाई ॥

जप तप जग्य दान विधि नाना । गोमय लेपन सकल विधाना ॥
पंचगव्य पंचतत्त्व निखारे । पंचप्राण ब्रह्मरंध्र सिधारे ॥
नेम छेम गौ ककुद निवासू । रोम रोम जाके सुरबासू ॥
सींग सिखर गौमात चढ़ाई । कामक्रोध रिपु लोभ मिटाई ॥
गल कंबल नव जीवन दाता । कामधेनु वर त्रिभुवन माता ॥
भानुपीठ मंगल शुभकारी । दरस परस पावन अघहारी ॥
वरदायिनि सब रोग मिटाई । वैतरणी भव पार लगाई ॥
गौमुख गंगा वेग बहाई । शब्द मंत्र गौ देत बनाई ॥
श्राद्ध पिण्ड तर्पन मख पूजा । साधन सिद्धि धेनु नहिं दूजा ॥
सकल करम साखी गौमाता । विमुख धेनु सो नरक निपाता ॥

ब्रह्ममुहूर्त पावन सब कहई । गोधूलि वेला शुभ करई ॥
जाके स्वास वेद विधि गाई । गोरज विधि को लेख मिटाई ॥
प्रातःकाल उठि दर्शन पावा । वेदपुरान सुदर्शन गावा ॥
सुरभि सुमंगल भारतमाता । मेटत भाल कुअंक विधाता ॥
रिषि संगी गौ छीर मंगाई । बांझ दोष सब दूर कराई ॥
पावन कोख राम अवतारू । गोकुल कृष्ण जानि जगसारू ॥
ध्रुव प्रह्लाद हरि भगत कहावा । मांकी कोख धेनुपय पावा ॥
सत्यकाम ब्रह्मज्ञान जिग्यासू । गोसेवा ते मोह विनासू ॥
जेरथ विस्व फिरे अभिमानी । बिश्वामित्र भये मुनिज्ञानी ॥
जाकी ईष्ट धेनु रिषि गाई । रिषि वसिष्ठ गुरु गोरख पाई ॥

परसुराम गौ मात बचाई । अमर अजर कीरति जग छाई ॥
सावित्री सत्यवान समेता । फिरि नाचिकेत जमराज निकेता ॥
अस्थि दधीचि वज्र होइ जाई । सदा धेनुपय पान कराई ॥
दूध धेनु जग अमित कहाई । गोघृत उपमा खोजि न पाई ॥
निर्बलता सब धेनु मिटाई । प्रबल रूप नरसिंह बनाई ॥
भारत पारथ रूप संभारा । नृप विराट गृह धेनु पुकारा ॥
तीरथ वसे धेनु खुरमाहीं । शरण गए सब बिपद नसांही ॥
माँ माँ कहत फिरत बन भागा । माधव नाम मिले हरि मांगा ॥
नारद कृष्ण वेनु अरुवीना । गावत गौ गुन गानप्रवीना ॥
नृपदिलीप गौ सेवा कीन्हे । सुन्दर सुत रघु आसिष दीन्हे ॥

कालीदास गौसाई पावा । चित्रकूट चित धेनु वसावा ॥
जनक ब्रह्मज्ञानी बड़ भारी । गाय निरादर नरक निहारी ॥
रिषि दुर्वास यह बात बताई । पान्डव पांच कुंता सुत पाई ॥
द्रोपदी लाज रखे यदुराई । नामदेव मृत धेनु जिआई ॥
धेनुमानस जेहि विधि पाई । सोइ गोपाल धेनु चालीसा गाई ॥
जे नित धेनु चालीसा गावे । मिटे कष्ट गौ भक्ति बढ़ावे ॥

दोहा—

श्री रूप सुरभि सदा । कीरति बिसद अथाह ॥
कह गोपाल सुख संपदा । नित्य धेनु की छांह ॥

गौ माता आरती

ॐ जै जै गौ माता मैया जै जै गौ माता ।
निसदिन तुमको ध्यावत, हरि शिवजी धाता । ॐ जै जै ..
मंथन समुद्र को कीन्हो, तब प्रगटी मैया ।
रिषिमंडल ने लीन्हो, कामधेनु गैया । ॐ जै जै ..
कोटि तैंतीस देवता, रोम रोम में बसे ।
पंचगव्य जो लेता, जन्मों के पाप नशे ॥ ॐ जै जै ..
सर्वोषधि भंडारी, तू ही है मैया ।
घर भी कहे उसी को, जिस आँगन गैया ॥ ॐ जै जै ..
संकट उनके हरती, पार बैतरणी करे ।

तेरी पूँछ धरे जो, भवसागर से तरे ॥ ॐ जैजै...
तेरे खुर की धूरि, माथे पे जो लगावे ।
तीर्थस्नान का फल हो, पद पद विजय मिलावे ॥ ॐ जैजै...
श्री कृष्ण बसे माँ तुझमें, तुमको जो ध्यावे ।
मन इच्छा हो पूरी, मानव तन पावे ।
गौ माता की आरती, प्रीत से जो गावे ।
कह गोपाल मैं शरण हूँ, महिमा नित पावे ॥ ॐ जैजै...

जय गौमाता जय गोपाल भक्त वत्सल प्रभु-दीन दयाल ।
प्रिय गौमाता, प्रिय गोपाल, भक्त वत्सल प्रभु-दीन दयाल ।
जगजननी गौमाता की जय हो । नन्दीश्वर भगवान की जय हो ॥

विश्व मंगल गो ग्राम यात्रा

अभियान गीत

मंगलकारी माँ हमारी गौ माता, जय हो जय हो माँ, हमारी गौ माता ।
ॐकार है माँ, हमारी गौ माता, जय हो जय हो माँ, हमारी गौ माता ।
परब्रह्म है माँ, हमारी गौ माता, जय हो जय हो माँ, हमारी गौ माता ।

देवासुर संग्राम में हमने, गौ माता को पाया था ।
रघुकुल में वह कामधेनु थी, कान्हा ने अपनाया था ॥
भक्तों की भगवान, हमारी गौ माता, जय हो जय हो माँ हमारी गौ माता ।
गौरक्षा मम दीक्षा है, आओ हम संकल्प करें ।
गाय की रक्षा जो करेगा, उसकी रक्षा गाय करे ॥

करें मन्त्र उच्चार, हमारी गौ माता । जय हो जय हो माँ, हमारी गौ माता ॥
ग्रामोदय से राष्ट्रोदय का, ध्येय बनी है गौ माता ।
विश्व का मंगल माँ से होगा, परम शक्ति है गौ माता ॥
मानवता पर्याय हमारी गौ माता, जय हो जय हो माँ, हमारी गौ माता ॥
अभय धाम और अभय ग्राम से, सबको अभय बनायेंगे ।
संत शक्ति संदेश बनी है, गौ साम्राज्य रचायेंगे ॥
स्वतंत्रता संग्राम, हमारी गौ माता । जय हो जय हो माँ, हमारी गौ माता ॥
कुरुक्षेत्र उद्घोष बना है, चलें गांव की ओर चलें ।
हर जन का संकल्प बना है, हर घर में अब गाय पले ॥
प्रकृति है विश्वास, हमारी गौ माता । जय हो जय हो माँ, हमारी गौ माता ॥

रोगमुक्त यह तन मन होगा, पन्चगव्य का पान करें।
मोक्ष प्राप्ति का द्वार खुलेगा, गौ माता का ध्यान धरें॥
अन्नपूर्णा माँ, हमारी गौ माता। जय हो जय हो माँ, हमारी गौ माता॥
ऋषिमुनियों ने सेवा करके, मनवांछित फल प्राप्त किया।
गौ माता को ईष्ट बनाकर, जनजन का कल्याण किया॥
महिमा अपरम्पार हमारी गौ माता। जय हो जय हो माँ हमारी गौ माता॥
गौ भक्ति ईश्वर शक्ति है, गौ रक्षा का भाव धरें।
सफल करेंगे यह आयोजन, हर घर घर सम्पर्क करें॥
“भारती” अब तो जाग हमारी गौ माता।
जय हो जय हो माँ हमारी गौ माता ॥

॥ ॐ जयश्री गोविंद गोपालाय, जयश्री गोविंद गोपालाय, जयश्री गोविंद गोपालाय शरणम् प्रपद्ये ॥

तत्त्वज्ञान प्रार्थना

ॐ अनन्त ब्रह्माण्डों के स्वामी प्यारे परमात्मा !
अज्ञानवश आप से भिन्न माने गये, मेरे मिथ्या अस्तित्व का नाश कर,
मुझे अपनी शरण में रखते हुए, इस काया से
विश्व का अधिकतम उपकार करवाने की कृपा अतिशीघ्र करें।
प्यारे प्रभु ! ये तन-मन-धन और बुद्धि, मेरे नहीं आपके हो चुके हैं।
कृपा कर पूर्ण रूप से समर्पित,
इस जीवात्मा का सादर प्रणाम स्वीकार करते हुए,
आपका भजन हमेशा होते रहने की अनुकम्पा करें।
हे नाथ ! विश्व के समस्त गौवंश के सुचारु प्रतिपालन से,
सनातन धर्म की रक्षा करते हुए, गीता ज्ञान द्वारा,
सभी मनुष्यों को सात्विक आहारी, समतायुक्त और त्यागी बनाकर,
सर्वत्र आपकी जय-जयकार मनाने का सामर्थ्य प्रदान करें।

ॐ (सर्व मंगल प्रार्थना) ॐ

ॐ अनन्त ब्रह्माण्डों की जननी परम श्रद्धामयी गौमाता !
पूर्ण समर्पित इस जीवात्मा का सादर प्रणाम स्वीकार करें ।

प्रिय करुणामयी माते !

विश्व के समस्त मंदिरों में पुनः धर्म जागृति का संचार करके,

सर्वत्र सनातन धर्म व श्रीरामराज्य

पुनः स्थापित करने की कृपा अतिशीघ्र करें ।

॥ ॐ जयश्रीगौमाताय, जयश्रीगौमाताय, जयश्रीगौमाताय शरणं प्रपद्ये ॥

卐 (विश्व मंगल प्रार्थना) 卐

अनन्त ब्रह्माण्डों को धारण करने वाले,
अनन्त प्राणियों का पालन-पोषण करने वाले,
परम श्रद्धेय परमात्मा की, हम शरण स्वीकार करके,
वन्दना करते हैं कि, प्रिय करुणा सागर प्रभु !

मानव मात्र में सद्भावना जागृत करके,
विश्व में सर्वत्र सनातन धर्म व श्रीरामराज्य
पुनः स्थापित करने की कृपा अतिशीघ्र करें ।

॥ ॐ जय श्री नन्दीश्वराय, जय श्री नन्दीश्वराय, जय श्री नन्दीश्वराय शरणं प्रपद्ये ॥

पूर्ण समर्पण प्रार्थना

प्यारे प्रभु प्रसन्न होकर, हमको शरण में लीजिये ।
हम आपको कभी भूलें नहीं, ऐसी कृपा कीजिये ।
अज्ञान का हो नाश, गीता ज्ञान हमको दीजिये ।
प्यारे प्रभु प्रसन्न होकर, हमको शरण में लीजिये ।

- (१) हम मात - पिता, गुरु, गौमाता की, निःस्वार्थ भाव से सेवा करें ।
हम धर्मपरायण तत्त्वज्ञानी होकर, इस जग का उपकार करें ।
प्यारे प्रभु हम पर ऐसी, आप करुणा कीजिये । प्यारे प्रभु हमें ऐसा, सच्चाज्ञान दीजिये ॥
- (२) हम आप पर श्रद्धा विश्वास कर, सभी को तत्त्वज्ञान सिखलायें ।
हम राग, द्वेष, काम, क्रोध, मद, लालच से मुक्त हों ।
प्यारे प्रभु हमें ऐसी, सद्बुद्धि तो दीजिये । प्यारे प्रभु हमें ऐसी, सत्संग आप दीजिये ॥

(३) हम अहिंसा के द्वारा, सनातन धर्म की रक्षा कर सत्यवादी बनें ।

हम मन में संतोष धर, सर्वत्र आपका दर्शन करें ।

प्यारे प्रभु हमें ऐसी, विवेकशक्ति दीजिये । प्यारे प्रभु हमें ऐसी, प्रगाढ़भक्ति दीजिये ॥

(४) हम सभी को समता त्याग सिखा, सात्विक आहारी बना सकें ।

हम तन, मन, धन, व वक्त का, सही उपयोग निभा सकें ।

प्यारे प्रभु हमें ऐसी, मधुरम्वाणी दीजिये । प्यारे प्रभु हम पर ऐसी, आप कृपा कीजिये ॥

(५) हम पूर्ण आनन्दित होकर, सदा प्रेम से आपका सुमिरण करें ।

हम जीवन आपको अर्पण कर, कामनाओं का त्याग करें ।

प्यारे प्रभु हमें ऐसा, आशीर्वाद दीजिये । प्यारे प्रभु हम पर ऐसी, आप दया कीजिये ॥

(६) हम आत्मा को परमात्मा मान, मनसे मोहको छोड़ सकें ।

निज अस्तित्व आप में लीन कर, जीते जी शांति पा सकें ।

प्यारे प्रभु हमें ऐसा, वैराग्य उत्तम दीजिये । प्यारे प्रभु हमें ऐसा, माधुर्यभाव दीजिये ॥

(७) हम गोवंश का प्रति पालन कर, आपकी जय जयकार करें ।

प्यारे प्रभु हमें ऐसा, आप सामर्थ्य दीजिये ।

प्यारे प्रभु हमें शरण में लेकर, ये प्रार्थना स्वीकार करें ॥

प्यारे प्रभु प्रसन्न होकर, हमको शरण में लीजिये ।

हम आपको कभी भूलें नहीं, ऐसी कृपा कीजिये ॥

अज्ञान का हो नाश, गीता ज्ञान हमको दीजिये ।

प्यारे प्रभु प्रसन्न होकर, हमको शरण में लीजिये ॥ प्यारे प्रभु ... (२)

ॐ जयश्री गोविन्दगोपालाय शरणं प्रपद्ये:

श्री गीता आश्रम गौ महातीर्थ की सहयोग योजनाएं

- | | | | |
|---|---|----------|-----------------------|
| 1) गौ सेवा में आहुति रूपी हरी/सूखी घास राशि | : | 4100/- | (प्रति गाड़ी)। |
| 2) नित्य गौ घास सेवा महायज्ञ - मातृशक्ति | : | 360/- | (प्रति वित्तवर्ष)। |
| पुरुष प्रभु | : | 1200/- | प्रति वित्तवर्ष |
| 3) गौ सेवा प्रतिपालन राशि प्रति गौमाता | : | 1500/- | मासिक। |
| | : | 18000/- | वार्षिक। |
| | : | 111111/- | आजीवन |
| 4) गौ खाद्य सामग्री की सवामणी | : | 1800/- | (50 गौ माताओं के लिए) |
| 5) आजीवन सदस्य-आजीवन आशीर्वाद | : | 5100/- | प्रति सदस्य। |